Gupta period (Part -10)

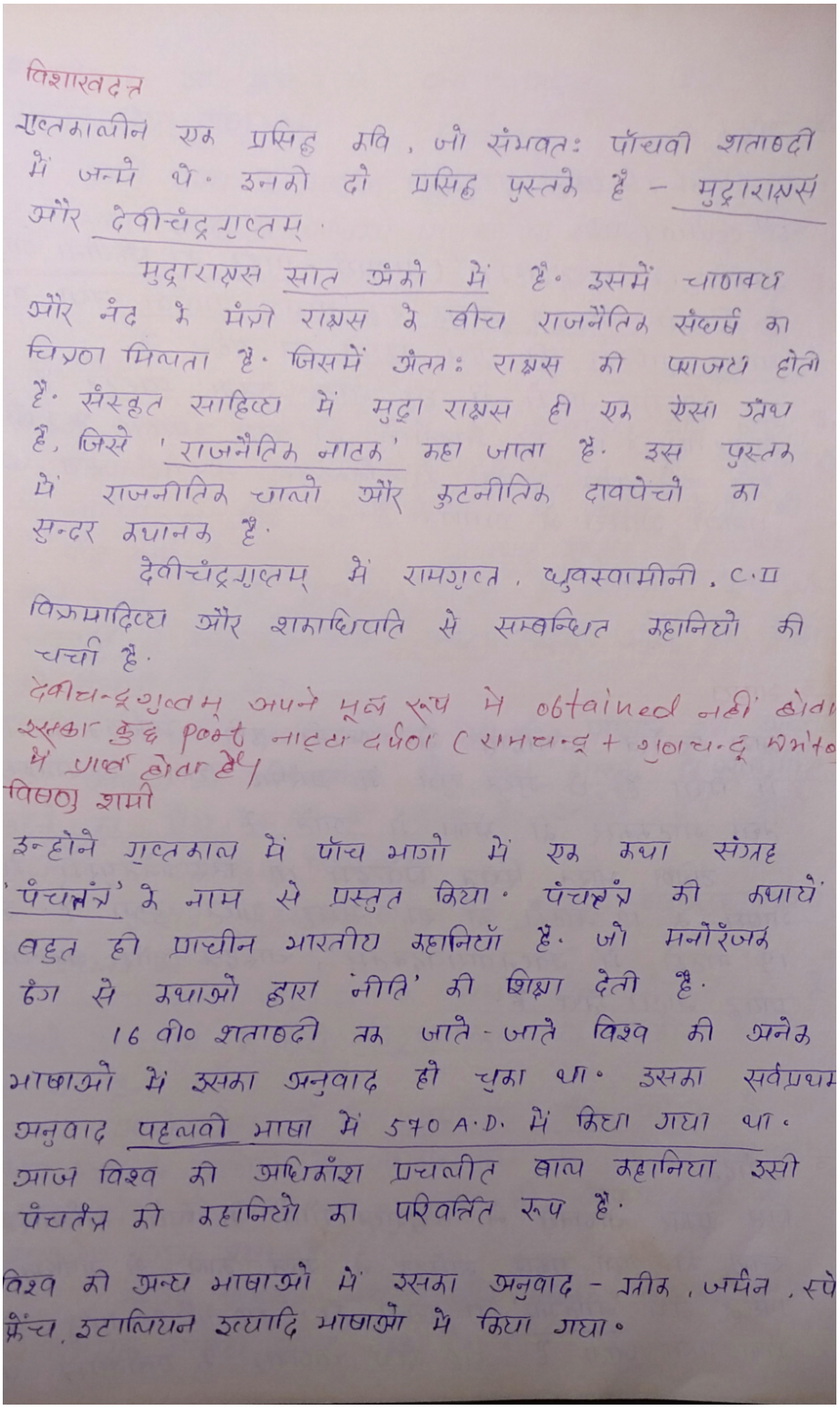

विशाखदत्त

गुप्तकालीन एक प्रसिद्ध कवि, जो संभवतः पाँचवी शताब्दी में जन्मे थे. इनकी दो प्रसिद्ध पुस्तके हैं – मुद्राराक्षस और देवीचंद्रगुप्तम्.

मुद्राराक्षस सात अंको में है. इसमें चाणक्य और नंद के मंत्री राक्षस के बीच राजनैतिक संघर्ष का चित्रण मिलता है. जिसमें अंततः राक्षस की पराजय होती है. संस्कृत साहित्य में मुद्रा राक्षस ही एक ऐसा ग्रंथ है, जिसे 'राजनैतिक नाटक' कहा जाता है. इस पुस्तक में राजनीतिक चालो और कूटनीतिक दावपेंचो का सुन्दर कथानक है.

देवीचंद्रगुप्तम् में रामगुप्त, ध्रुवस्वामीनी, C.II विक्रमादित्य और शकाधिपति से सम्बन्धित कहानियो की चर्चा है.

देवीचन्द्रगुप्तम् अपने मूल रूप मे obtained नहीं होता। इसका कुछ part नाट्य दर्पण (रामचन्द्र + गुणचन्द्र रचित) मे प्राप्त होता है।

विष्णु शर्मा

इन्होने गुप्तकाल में पाँच भागो में एक कथा संग्रह 'पंचतंत्र' के नाम से प्रस्तुत किया. पंचतंत्र की कथायें बहुत ही प्राचीन भारतीय कहानियाँ हैं. जो मनोरंजक ढंग से कथाओ द्वारा 'नीति' की शिक्षा देती है.

16 वी॰ शताब्दी तक जाते-जाते विश्व की अनेक भाषाओ में इसका अनुवाद हो चुका था. इसका सर्वप्रथम अनुवाद पहलवी भाषा में 570 A.D. में किया गया था. आज विश्व की अधिकांश प्रचलीत बाल कहानिया इसी पंचतंत्र की कहानियो का परिवर्तित रूप है.

विश्व की अन्य भाषाओ में इसका अनुवाद – ग्रीक, जर्मन, स्पे फ्रेंच, इटालियन इत्यादि भाषाओं मे किया गया.

3 शूद्रक

गुप्त युग का श्रेष्ठ नाटककार

5th century A.D.

इनकी कृति 'मृच्छकटिकम्' (तात्पर्य - मिट्टी का खिलौना गाड़ी) है। जिसमें चारुदत्त नामक एक ब्राह्मण सार्थवा तथा वसंतसेना नामक गणिका की प्रेम कहानी का वर्णन है।

भारतीय नाटकों में यह नाटक इतना स्वच्छंद है और अभारतीय है कि कुछ भारतीयों की यह धारणा है कि यह कृति ग्रीक कॉमेडी का निकटतम भारतीय रूप और यूनानी रंगमंच से प्रभावित है।

3 भास

इनका उल्लेख कालीदास ने अपनी कृति मालविकाग्निमित्रम् में किया है। ये गुप्त युग में प्रारंभिक युग के साहित्यकार तथा नाटककार की श्रेणी में आते हैं।

दक्षिण भारत स्थित त्रिवेन्द्रम या तिरूअनंतपुरम् में भास के 13 नाटकों का एक संग्रह प्राप्त हुआ है। इन 13 नाटकों में "स्वप्नवासवदत्तम्", चारुदत्त और बालचरित' प्रसिद्ध नाट्य ग्रंथ हैं।

3 कामंदक

जिस प्रकार चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य के लिये अर्थशास्त्र की रचना की उसी प्रकार कामंदक ने गुप्त काल से संबंधित एक प्रसिद्ध ग्रंथ 'नीतिसार' की रचना की। यह 4th century का ग्रंथ माना जाता है। यह ग्रंथ चाणक्य के अर्थशास्त्र पर